OM

Physical & Scientific Interpretation of Aryan Mythology

Part—I

Ganesha (= Ganapati), Kumara = Skanda = Karttikeya, Two Ashvins & Yama.

[देवतावाद का भौतिक तथा वैज्ञानिक रहस्य]

भाग—१

गणेश (गणपति), कुमार (स्कन्द=कार्त्तिकेय), दो अश्वि-देवता और यम देवता

इङ्गलिश तथा राष्ट्रीय भाषा में)

By

Hans Raj

Formerly Librarian & Research Scholar, D. A. V. College, Research Department Lahore and Vishveshvaranand Vedic Research Institute, Sadhu Ashram, Hoshiarpur, East Panjab, Compilor of Vedic-Kosha & author of 'Science in the Vedas'.

लेखक—

हंसराज

पूर्व पुस्तकाध्यक्ष तथा अनुसन्धानकर्त्ता—डी० ए० वी० कालेज, रीसर्च विभाग लाहौर तथा विश्वेश्वरानन्द वैदिक रिसर्च इन्स्टीच्यूट, होश्यारपुर, तथा वैदिककोष और 'साइंस-इन-दि वेदाज' का लेखक।

Published by—

Hans Raj, 29-Market, South Patel Nagar, New Delhi.

प्रकाशक—हंसराज, २९-मार्केट, साउथ पटेल नगर, नई देहली।

1000] 1957 [Price Re 1/-

Ganesha (=Ganapati)

I. Ganesha (Ganapati) is an epithet of Rudra which is a form of Agni. See page3—१-(क) महाभारत ·····(ख) ····· (ग)·····See page 5:—एतान्यष्टौ·····

2 He is considered as a son of Rudra like Kumara (Skanda, Karttikeya). As son is physically a form of a father, hence Ganesha is a form of rudra (= Agni) like Kumara who is said to be a form of Agni-

3. His complexion is considered as red like sulphate of lead. Agni also is closely connected with the red colour.

See page:1–2-·····' (सिन्दूराभम् ·····)·····; ५— ·····सिन्दूराभं त्रिनेत्रं रक्तवस्त्रांगरागम्"·····

See page 5, line 5:—रोहितोऽग्नेः;line 3:—रक्तवर्णम्····

4. His vehicle is said to be a rat. Similarly a rat is an animal of Rudra (=fire) an emblem, of fearfulness. Rat's fearfulness is wel-known during the plague epidemic.

See page 5:- अग्निर्देवेभ्यो·····' आखुस्ते पशुः (यजु० ३। ५७॥

5. Dvaimatura' is a name of Ganesha, on account of his having two mothers (Durga & Chamunda). Agni is also mentioned as having two mothers: the two aranis (pieces of wood), by the friction of wich fire is produced for a Yajna.

See page 1:- 3-·····द्वै मातुर·····

See page 6, line 9 to 7 from below:-·····त्वमग्ने ····· द्विमाता ····· (ऋ० १। ३१। २॥) ···· द्यावापृथिवी अरणी वा मातृस्थानीये यस्य स द्विमाता

6. He is said to be 'Buddhi-sagara' (an ocean of wisdom). Agni (Omniscient God, or fire which has 'light' as its attribute-a synonym of knowledge) is also stated as Vipratama the most enlightened."

See page 1:- ५-·····शिव महापुराण ·····; ४-····· महाबुद्धि, ब्रह्मणस्पति·····

7. Indra & Brihaspati have been stated as Ganapati (=Ganesha) and kavi (wise) in RV X. 112. 9 & II. 23. 1 respectively.

Brihaspati is also an emblem of wisdom.

See page 3:- (ग) "त्वामाहु०·····" "गणनां त्वा·····" and

"विल्किन्स" रचित Hindu Mythology.....with an elephant's head, an emblem of segacity"

8. He has been called "Lambodara" and "Mahodara (having a large belly) such epithets are given only to him who eats very much. Agni also is one 'who eats most' and 'who eats up every thing'.

See page 1:- ४.....

See page4:- (क) to (घ)

9. His head is just like that of an elephant.

See page1:- २-गजमुखतया .....

Ganesha is represented as swastika which somewhat looks like an elephant's trunk.

See page 5-.....

Agni also is connected with an elephant, which is mentioned as his vehicle.

See page 5:-मरीचि संहिता.....The attendants (पारिषद) of गणेश=गणपति= सेनानी=कुमार=स्कन्द are mentioned to wear an elephant's skin as their clothes.

See page 5, line 6th from below:-गजेन्द्रचर्मवसना:.....

See page 3:-.....Elephant's head : an emblem of segacity.

10. In all the rituals Ganesha is worshipped in the beinning.

See page 1:- 2-.....

Similarly Agni is satisfied (figuratively) first by pouring oblation of clarified butter into it. Other gods (natural forces as water, air &c.) reccive their portion through Agni as their mouth.

See page 6, line 4 to 9:- अग्नि देवतानां प्रथमं यजेत्..... किंचनारे.....

11. "Dharanidhara" (Supporter of Earth) also is a name of Ganesha.

See page 1:- 4- .....

Earth is specially connected with Agni, and is mentioned as his wife figuratively. Agni in any form is most essential for the Earthly creatures.

See page 6, lines 5 to 2 from below.

The above-noted proofs show that Ganesha = Ganapati is identical whith Agni.

❀ ओ३म् ❀

'देवता रहस्य' ग्रन्थमाला—पुष्प १

(Interpretation of Aryan Mythology, Part I.)

गणेश का पौराणिक तथा वैदिक स्वरूप

लेखक:—

हंसराज

पूर्व—रीसर्च स्कालर [अनुसन्धान कर्त्ता] तथा पुस्तकाध्यक्ष डी०ए०वी० कालेज [लाहौर] रीसर्च विभाग, तथा विश्वेश्वरानन्द वैदिक इन्स्टीच्यूट होशियारपुर तथा वेद की शाखाओं, ब्राह्मण-ग्रन्थों और आरण्यकों में से "वैदिक-कोष" का निर्माता

प्रकाशक :—

हंसराज, नं० २६, साऊथ पटेलनगर,

नई देहली ।

प्रथमवार १०००]

[मूल्य =)

गणेश का पौराणिक तथा वैदिक स्वरूप

(लेखक—श्री महाशय हंसराज, भूतपूर्व अनुसन्धान कर्त्ता,
अनुसन्धान विभाग, डी० ए० वी० कालिज लाहौर;
तथा विश्वेश्वरानन्द वैदिक रिसर्च इन्स्टीच्यूट, होश्यारपुर, पंजाब)

—:०:—

गणेश देवता के स्वरूप के सम्बन्ध में पौराणिक साहित्य में लिखा है कि :—

१—गणेश शिव जी (रुद्र) का पुत्र है।

२—गणेश सिन्दूर के सदृश लाल वर्ण वाला है (सिन्दूराभम्, शब्दकल्पद्रुम, गणेश शब्द)। उसका वाहन चूहा है। मुख हाथी का है। (गजमुखतया हस्तिन्या अपत्यत्वात्—भानुजि दीक्षित कृत रामाश्रमी अमरकोष-व्याख्या) प्रत्येक शुभकार्य के आरम्भ में उसकी पूजा की जाती है।

३—गणेश को "द्वैमातुर" कहा है। "द्वैमातुर" का अर्थ है—दो माताओं वाला। दुर्गा और चामुण्डा इन दो माताओं का वह पुत्र है। यथा :—

द्वैमातुर=गणाधिप (गणेश) अमरकोष १।१।३८
दुर्गाचामुण्डाभ्यां पालितत्वात्। (भानुजी दीक्षितकृत रामाश्रमी व्याख्या)

४—गणेश-स्तोत्रों में गणेश को वक्रतुण्ड, विघ्नेश, लम्बोदर, महाबुद्धि ब्रह्मणस्पति, विनायक, कपिल, धरणीधर, महोदर, धूम्र-(धूम)-केतु, मयूरेश आदि नामों द्वारा स्मरण किया गया है। (बृहत्स्तोत्ररत्नाकर, पृष्ठ ४-५, निर्णय सागर यन्त्रालय, बम्बई)।

५—इसी प्रकार शिव महापुराण, ज्ञान संहिता ३६।६ में गणेश को बुद्धिसागर कहा गया है। यथा 'गणेशं बुद्धिसागरम्।' शब्दकल्पद्रुम में गणेश का वर्णन किया है "सिन्दूराभं, त्रिनेत्रं, रक्तवस्त्राङ्गरागम्"—इन विशेषणों द्वारा।

इस प्रकार पौराणिक साहित्य में उपर्युक्तरूप में गणेश का वर्णन मिलता है। अब इस के वैदिक स्वरूप का निदर्शन देखिये :—

१—गणेश वस्तुतः रुद्र अर्थात् अग्नि का ही रूपान्तर (पुत्र) है। क्योंकि गणेश के सम्बन्ध में जो कथन ऊपर हुआ है उससे मिलता-जुलता वर्णन वेदों, शाखाओं और ब्राह्मण ग्रन्थों में अग्नि के सम्बन्ध में औपचारिक रूप से कहा गया है। उसे न समझ कर सचमुच के गजमुख वाले शरीरधारी देवता की कल्पना करली गई है। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रमाण उपस्थित किये जाते हैं।

१—(क) महाभारत, अनुशासनपर्व, अध्या० ४८ कुम्भघोण सं० तथा अ० १७ की नील-कण्ठीय सं० में गणपति नाम रुद्र के लिये आया है, और वैदिक साहित्य में रुद्र पद अग्नि के लिये स्थान २ पर प्रयुक्त हुआ है। तथा आगे भी प्रमाण लिखेंगे !

(ख) यजुर्वेद ११।१५ में "रुद्रस्य गाणपत्यम्" पाठ आया है। जिसका यह अभिप्राय है कि रुद्र ही गणपति हैं। और रुद्र का अर्थ है अग्नि। इसलिये गणपति का अर्थ अग्नि हुआ।

(ग) ऋग्वेद २,२३,१ में बृहस्पति को गणपति तथा कवि (अर्थात् मेधावी) कहा है। बृहस्पति का अर्थ होता है वेदवाणी का पति। इसलिए गणपति को विद्या और बुद्धि का देवता मान लिया गया। वेदों में इन्द्र को भी मेधावी और गणपति (ऋ० १०।११२।६) कहा है। श्री R.G. भण्डारकर अपनी पुस्तक Vaishnavism, Shaivism, पृष्ठ १४६ में लिखते हैं कि "Ganapati's reputation for wisdom I believe to be attributed to the confusion between him and Brihaspati, who is called Ganapati, in R V. II 23 1. Brihaspati of course is the Vedic god of wisdom, and is called the sage of sages."

इसी प्रकार ऋ० १०।११२।६ में गणपति के सम्बन्ध में कहा है कि—

"त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनाम्।" तथा—

"गाणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुप श्रवस्तमम्।" ऋ० २,२३,१

अर्थात् गणपति मेधावियों में सबसे अधिक मेधावी है, और कवियों में सबसे बड़ा कवि है।

"विल्किन्स" रचित "Hindu Mythology", 2nd edition, p. 324 में लिखा है "कि Ganesh is the Hindu god of Prudence and Policy. He.....is repre sented with an elephant's head : an emblem of sagacity" अर्थात् हिन्दू धर्म में गणेश को बुद्धिमत्ता और नीति का देवता माना है। उसका सिर हाथी का सिर कहा जाता है। यह चिन्ह उसकी बुद्धिमत्ता का सूचक है। यद्यपि प्राकृतिक अग्नि में बुद्धिमत्ता का वर्णन चरितार्थ नहीं हो सकता। तब भी वेदों में अग्नि के नाना अर्थ लिये जाते हैं। जैसे कि ब्राह्मण, परमात्मा आदि। उन आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक अर्थों में ये वर्णन सार्थक हो जाते हैं।

गणेश का नाम लम्बोदर तथा महोदर भी है। बहुत खाने के कारण व्यक्ति को लम्बोदर कहा जाता है। बहुत खाने की दृष्टि से "अग्नि" लम्बोदर तथा महोदर है। अग्नि में जो कुछ डाल दिया जाय उसे वह खा जाती है, भस्म कर देती है। तथा

जितना भी डाल दिया जाय उसे खा जाती तथा भस्म कर देती है। अग्नि खाती है इस सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रमाण हैं:—

(क) "विश्वादमग्निं यमु काममाहुः" (मैत्रायणी संहिता २, १३, १३)।

(ख) ऋग्वेद ८, ४४,२६ में भी अग्नि को "विश्वाद्" कहा है। विश्वाद् का अर्थ है विश्व को खा जाने वाला, सबको खा जाने वाला।

(ग) शतपथ ब्राह्मण १०।१।४।१३ में लिखा है कि ! "सर्वं वा इदमग्नेरन्नम्।" अर्थात् यह सब कुछ अग्नि का अन्न है। इसी प्रकार इस सम्बन्ध में निम्नलिखित प्रमाण भी स्मरणीय हैं।

(घ) "अग्निर्देवानां जठरम्" (तैत्ति० ब्रा० २, ७, १२, ३)। "एष उ ह वाव देवानां महाशनतमो यदग्निः" (जैमि० उपनि० ब्रा० २, १५, १)। "अग्ने···अशीतम" (श० ब्रा० १, ६, २, २०; तथा यजु० २, २०)। इस पर महीधर ने अशीतम का अर्थ किया है भोक्तृतम, अर्थात् सबसे अधिक खाने वाला। ताण्ड्य महा ब्रा० २५।६।३ में लिखा है "अग्नेर्वै सर्वमाद्यम्।" शत० ब्रा० २, ६, ३, १५ में लिखा है कि "सर्वतोमुखोऽयमग्निः। यतो ह्येव कुतश्चाग्नावभ्यादधति तत एव प्रदहति, तेनैष सर्वतोमुखस्तेनान्नादः।" शत० ब्रा० १०, ६, २, २ में लिखा है कि "स वै यः सोऽत्ताऽग्निरेव सः।" इसी प्रकार ऐत० ब्रा० १।८ में लिखा है कि "अन्नादो वा एषोऽन्नपतिर्यदग्निः।"

गणेश को जो त्रिनेत्र (तीन आंखों वाला) कहा गया है उसका कारण रुद्रवाची 'त्र्यम्बक' शब्द है जो यजुर्वेद में आया है। उसका अर्थ 'तीन आंखों वाला' किया जाता है जो कि शतपथ ब्रा० २।६।२।६॥ काठक सं० ३६।१४॥ और मैत्रायणी-संहिता १।१०।२० के विरुद्ध है॥

गणेश का नाम विनायक भी है। विनायक का अर्थ है "विशिष्टो नायकः" अर्थात् सेनानायक, सेनानी। अग्नि को भी सेनानी कहा है। यथा—"अग्निर्वै देवानां सेनानी।" (काठक सं० ३६।८)। इसलिये विनायक नाम भी अग्नि अर्थ में चरितार्थ होता है।

गणेश को कपिल भी कहते हैं। अग्नि प्रत्यक्ष रूप में कपिल वर्ण का होता है। कहा भी है "अग्निः सः कपिलो नाम" (महा० भा० वनपर्व २२१।२१)।

गणेश को धूम्र-(धूम-) केतु भी कहते हैं। धूमकेतु अग्नि का नाम है, अर्थात् धूआं जिसका केतु है, भण्डा है। धूआं अग्नि का ही केतु (झण्डा) है।

गणेश का नाम मयूरेश्वर=(स्कन्द=कुमार) भी है। अग्निका एक नाम है शिखी। शिखी का अर्थ होता है शिखा-वाला। अग्नि की शिखा है ज्वालाएं। मयूर अर्थात् मोर को भी शिखी कहते हैं, क्योंकि उसके भी शिखा होती है। इस समता मात्र के कारण अग्नि को भी मयूरेश्वर मान लिया गया।

"स्कन्द" अग्नि का इसलिये नाम है कि अग्नि गतिमान् है, और शोषण का हेतु है स्कन्द शब्द 'स्कन्दिर्' धातु से निष्पन्न होता है जिसका अर्थ है गति और शोषण।

अग्नि के रूपों में "कुमार" भी एक रूप है (जो कि गणेश का एक नाम है। अतः गणेश=अग्नि)। यथा:—

"एतान्यष्टौ (रुद्रः, सर्वः=शर्वः, पशुपतिः, उग्रः, अशनिः, भवः, महान् देवः, ईशानः) अग्निरूपाणि, कुमारो नवमः।" (शत० ब्रा० ६।१।३।१८)।

गणेश को सिन्दूर के सदृश लाल वर्ण वाला (रक्तवर्णम्, विमानार्चना कल्प पृ० ४७६) कहा है। तथा इसे 'रक्तवस्त्राङ्गराग' भी कहा है। निघण्टु में अग्नि के वाहन को रोहित अर्थात् लाल कहा है। यथा—"रोहितोऽग्नेः" (निघं० १।१५)। अग्नि की ज्वालाएं ही अग्नि के वाहन हैं, जलती हुई अग्नि की ज्वालाएं लाल होती ही हैं।

गणेश का वाहन चूहा माना जाता है। यह हम लिख चुके हैं कि गणेश अग्नि है। अग्नि के सम्बन्ध में लिखा है कि:—

"अग्निर्देवेभ्यो निलायत। आखूरूपं कृत्वा स पृथिवीं प्राविशत्॥"

(तैत्ति० ब्रा० १।१।३।३)।

अर्थात् अग्नि देवों से छिप गई। वह आखु (चूहे) के रूप में पृथिवी में जा छिपी। कभी वह सृष्टिकाल था जबकि पृथिवी सूर्य से पृथक् हुई थी। उस समय वह सूर्य की भांति धधक रही थी। शनैः २ पृथिवी ठण्डी हुई तब पृथिवी पर प्राणिसृष्टि हुई। उस समय पृथिवी के ऊपर का स्तर ठण्डा हो गया। उसका भीतरी भाग अब भी गर्म है। ज्वालामुखी पर्वतों की आग, तथा उष्ण झरने इस बात को प्रमाणित करते हैं कि पृथिवी के अन्तरीय भाग में अब भी अग्नि धधक रही है। मानो अग्नि चूहे की न्याई पृथिवी के भीतर जा छिपी है, और वह सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र आदि देवों की दृष्टि से छिप गई है। पृथिवी में छिप-जाना रूपी समता के कारण अग्नि को आखु कहा गया है।

इसी प्रकार रुद्र भी अग्नि का नाम है। और अग्नि गणेश है। इसलिये यजुर्वेद में रुद्र का वाहन भी आखु कहा गया है। यथा—आखुस्ते पशुः (यजु० ३, ५७)। रुद्र भयानकता का प्रतीक है। आखु (चूहा) भी महामारी का प्रधान कारण होने से भयंकर ही है।

गणेश स्वस्तिक के आकार का बनाया जाता है। यथा 卐। यह स्वस्तिक चिन्ह हाथी की सूंड के समान टेढ़ा है। इसलिये गणेश का मुख भी हाथी के मुख के सदृश मान लिया गया। अग्नि का वाहन गज कहा गया है (मरीचि संहिता, विमानार्चनाकल्पे पटल २०, पृष्ठ १२८)। सम्भवतः स्वस्तिक चिन्ह अग्नि की परस्पर-में-मिश्रित टेढ़ी लपटों या ज्वालाओं का एक चित्र मात्र हो। और इसी कारण गणेश या स्कन्द या कुमार के पारिषदों (सहायकों) को हाथी के चमड़े के बने हुए वस्त्रों को धारण करने वाले (गजेन्द्रचर्मवसनाः, महाभारत, शल्यपर्व, अ० ४५, श्लो० ७५, ८७ में) कहा गया है। अभिप्राय यह है कि जैसे गणेश अर्थात् अग्नि की ज्वालाओं की चाल टेढ़ी-मेढ़ी होती है और वे ज्वालाएं परस्पर में मिली-जुली सी रहती हैं इसी प्रकार अग्नि के पारिषद अर्थात् अग्नि के चारों ओर स्थित जो वायुपुञ्ज हैं वे भी अग्नि की ज्वालाओं के कारण टेढ़ी-मेढ़ी चालों वाले हो जाते हैं। उनकी भी चाल स्वस्तिक के चिन्ह के सदृश हो जाती है इसीलिये गणेश और पारिषदों का हाथी से सम्बन्ध दर्शाया है।

गणेश की प्रथम पूजा होती है,—इसका यह अभिप्राय है कि प्रत्येक शुभ कार्य के प्रारम्भ में अग्निहोत्र द्वारा अग्नि को प्रज्वलित करना चाहिये। यही अग्निपूजा है। गणेश चूंकि अग्नि है, और प्रत्येक शुभ कार्य के प्रारम्भ में अग्निहोत्र करने की विधि है। यह ही गणेश पूजा है। लिखा भी है कि—"अग्निं देवतानां प्रथमं यजेत्। अग्नि-मुखा एव देवताः प्रीणाति" (कपिष्ठल कठ संहिता ४८।१६)। तथा "अग्निः प्रथम इज्यते" (मैत्रा० सं० ३।८।१)। तथा "अग्निर्मुखं प्रथमो देवतानाम्" (काठक सं० ४।१६)।

ऋग्वेद १०।११२।९ में गणपति को विप्रतम और कवि कहते हुए लिखा है—'न ऋते त्वत् क्रियते किंचनारे·····'

अग्नि=रुद्र=गणपति। पुराणों में गणपति अर्थात् गणेश को रुद्र का पुत्र कहा है। हम कह चुके हैं गणेश भी अग्नि है, और रुद्र भी अग्नि है। जैसे पितापुत्र में अभेद-सम्बन्ध सा होता है, वैसे ही गणेश और रुद्र में भी अभेद सम्बन्ध समझना चाहिये। सब श्रेष्ठ कर्मों से पूर्व गणपति पूजन की प्रथा पौराणिकों में प्रचलित है। यह प्रथा अग्निहोत्र के ही स्थान पर प्रचलित कर दी गई है।

पुराणों में कुमार अर्थात् कार्तिकेय को महादेव का पुत्र कहा है। यह ऊपर लिखा जा चुका है कि कुमार का अभिप्राय है अग्नि। इस अग्नि को कार्तिकेय इसलिये कहते हैं कि कृत्तिका-नक्षत्र का देवता 'अग्नि' है। यथाः—

"एतद्वा अग्नेर्नक्षत्रं यत् कृत्तिकाः (तै० १।१।२)। तथा—

"एता वाऽअग्निनक्षत्रं यत् कृत्तिकाः (श० ब्रा० २।१।२।१)।

इसलिये अग्नि का कृत्तिका के साथ सम्बन्ध है। इसीलिये अग्नि को कार्तिकेय कहा जाता है। अथर्ववेद में कृत्तिका-नक्षत्र से नक्षत्र-परम्परा का प्रारम्भ माना है। यथा "सुहवग्ने कृत्तिका रोहिणी चास्तु भद्रं मृगशिरः शमार्द्रा" इत्यादि (२०।७।२—५)। गणेश को द्वैमातुर कहा गया है। अर्थात् गणेश दो माताओं का पुत्र है। गणेश है अग्नि। अग्नि दो प्रकार से दो माताओं का पुत्र है। यह द्युलोक और पृथिवीलोक का पुत्र है। तथा अग्नि, यतः दो अरणियों से मथ कर यज्ञकर्म के लिये उत्पन्न किया जाता है इसलिये भी दो अरणियां अग्नि की दो माताएं हैं। मन्त्रों में अग्नि को दो माताओं से उत्पन्न हुआ कहा गया है। यथाः—"त्वमग्ने·····द्विमाता·····" (ऋ० १।३१।२)। इस मन्त्र पर स्कन्द भाष्य में लिखा है कि "द्यावापृथिव्यौ अरणी वा मातृस्थानीये यस्य स द्विमाता।" अर्थात् अग्नि को "द्विमाता" इसलिये कहते हैं चूंकि द्यावा-पृथिवी तथा दो अरणियों से यह जन्म पाता है।

गणेश का नाम धरणीधर भी हैं। धरणीधर का अर्थ है "पृथिवी का धारण करने वाला।" अग्नि देवता है पृथिवी का। पृथिवीवासियों के काम अग्नि से ही चल रहे हैं इसलिए अग्नि धरणीधर है। यथा "अग्नेयी पृथिवी" (ताण्ड्य० ब्रा० १५।४।८)। तथा "पृथिव्यग्नेः पत्नी" (गोपथ ब्रा० उ०, २,९)। इस प्रकार यह मानना उचित प्रतीत होता है कि वैदिक साहित्य के अनुसार गणेश नाम अग्नि का है।

सूचना

वैदिक ग्रन्थों के मन्थन से बड़ी ही खोज पूर्ण प्रथम पुस्तक गणेश का पौराणिक तथा वैदिक स्वरूप ≡) में प्रकाशित कर ही दी है। अब 'देवता-रहस्य ग्रन्थ माला में छपने योग्य निम्न लिखित देवताओं के सम्बन्ध में वेद, वेद-सम्बन्धी ग्रन्थ तथा अन्य पुस्तकों से सामग्री खोजकर निकाल ली गई है और क्रमबद्ध कर ली गई है। इनके प्रकाशित होने से आपको ज्ञात हो जाएगा कि प्रजापति (ब्रह्मा) विष्णु, महेश (रुद्र) आदि देवता जो कि प्रायः करके एक ही चेतन-स्वरूप, अकाय (शरीर रहित) परमात्मा के नाम है और उसके उत्पादन, पालन और संहार आदि अनेक गुणों के द्योतक हैं, वह एक २ देवता एक से अधिक चेतन वा अचेतन अन्य पदार्थों के भी नाम हैं। उन देवताओं के सम्बन्ध में जो अनेक असम्भव वा अश्लील कथाएं प्रचलित हैं उनमें से कुछ भिन्न २ सांसारिक पदार्थों का आलंकारिकं = औपचारिक = गौण (भाक्त) वर्णन (अथवा पूर्व-मीमांसा की परिभाषा में 'अर्थवाद') ही हैं, जिसका वास्तविक भाव न समझकर और अपनी ओर से अनेक बातें मिलाकर उसे कल्पित शरीरधारी देवताओं के सम्बन्ध में सच्ची ऐतिहासिक घटना के सदृश लोक में प्रचरित किया गया ॥

वैदिक ग्रन्थों में खोज करने से देवताओं सम्बन्धी अनेक ऐसी बातों का पता लगा है जोकि बहुत न्यून सुनने में आई हैं तथा अधिकतर सर्वथा अश्रुतपूर्व और नवीन हैं। यह सब निम्न लिखित देवताओं सम्बन्धी लेखों में आ गई हैं। यदि कोई प्रकाशक इसमें से किसी लेख को प्रकाशित करना चाहे तो वह लेखक सेपत्र-व्यवहार करे।

जिस प्रकार का यह गणेश सम्बन्धी ग्रन्थ है उसी ढंग के यह ग्रन्थ भी हैं:—

१—प्रजापति (ब्रह्मा) ॥ २—विष्णु ॥ ३—रुद्र ॥ ४—दुर्गा (देवी, अम्बा, काली) ५—स्कन्द (कुमार, कार्त्तिकेय) ॥ ६ - अश्वि-देवता (देवताओं के वैद्य) ॥ ७—यम देवता ॥ ८—कामधेनु ॥ ९—विष्णु के दश अवतार ॥

इसके अतिरिक्त अग्नि, सोम, इन्द्र, अदिति, मित्र, वरुण, वसिष्ठ, गन्धर्व (नारद, पुरूरवस, अर्वाग्वसु), अप्सरस् (उर्वशी, घृताची), असुर = मेघ (वृत्र, नमुचि, जलन्धर, कबन्ध, वातापि), ऐरावण, ऐरावत, ऐरावती, सुदामन्, सौदामनी, यह सब किन २ के वाचक हैं। यह बातें हमारे अङ्गरेजी लघु पुस्तक 'सांइस इन दि वेदाज़' (मूल्य १॥) में वर्णित हैं, जिसमें यह दो वैज्ञानिक तत्त्व वेदों और वेद सम्बन्धी ग्रन्थों के बीसियों प्रमाणों से सिद्ध किये गए हैं:—

१—समस्त भौतिक जगत् केवल दो ही मूल तत्त्वों (अग्नि, सोम) से बना है अर्थात् दोनों प्रकार की बिजली के कणों से ॥

२—औक्सिजन (मित्र = प्राण-वायु), हाईड्रोजन (वरुण-उदान) के मिश्रण में विद्युत् (उर्वशी) के संयोग से जल (वसिष्ठ) की उत्पत्ति ॥

अभ्यर्थना—

हमें पूर्ण आशा है कि हमारी इस खोज से लाभ उठाकर अनेक लोगों को निश्चय हो जायेगा कि वेदों और आर्ष ग्रन्थों में अनेक विद्याएं भरी पड़ी हैं। और वह इनको जानने के लिये कटिबद्ध होकर आगे भी अनुसन्धान करने लगेंगे। उस समयअनेक और रहस्यों का भी उद्घाटन होगा। यह काम एक व्यक्ति का नहीं। सभी आर्य विद्वानों को इस ओर लगना चाहिए ॥ विशेषकर वेद, वेदों की तैत्तिरीय, काठक, मैत्रायणी, कपिष्ठलादि शाखाएं, जैमिनीय, शतपथादि समस्त ब्राह्मण, शांखायन, तैत्तिरीय, ऐतरेय आरण्यक, प्रसिद्ध दश उपनिषद्, कौषीतकी उपनिषद् (मैत्र्युपनिषद् भी उपयोगी हो सकतीहै), पूर्व मीमांसा, निघंटु तथा निरुक्त। यही ग्रन्थ वैदिक खोज के लिये अनिवार्य हैं ॥ आलोचक महाशयों से नम्र निवेदन है कि मेरे दिये प्रमाणों को ध्यान में रखकर आलोचना करें। और मुझसे सहमत न होने पर प्रमाण प्रस्तुत करें। केवल असहमति कोई हेतु नहीं ॥

विनीत:—हंसराज

२९–साऊथ पटेल नगर मार्केट
नई दिल्ली

मुद्रक—सार्वदेशिक प्रेस, दरियागंज, दिल्ली-७

कुमार=स्कन्द=कार्त्तिकेय

In the Puranic literature, there is a mention of a son of Rudra (Shiva) named Skanda=Kumara (Sanatkumara)= Karttikeya, Sanamatura. His mothers are six in number; he has six faces (heads),hence twelve eyes.He is the commander in-chief in the army of the gods. His wife's name is Devasena (literally, army of the gods). His colour is red. His vehicle is peacock or cock. He is also represented as having face of a goat.

[पौराणिक साहित्य में स्कन्द, कुमार (सनत्कुमार), कार्त्तिकेय षाण्मातुर इत्यादि नाम शिव जी के एक पुत्र के हैं जिसकी ६ माताएं कही गई हैं। स्कन्द के छः मुख, बारह नेत्र, कहे गये हैं । यह देवताओं का सेनानी (सेनापति) माना गया है। इसकी स्त्री का नाम देवसेना है। तथा इसका वर्ण लाल है। इसका वाहन शिखी (मोर वा कुक्कुट) है॥ कभी इसका मुख बकरे के मुख के सदृश भी कहा गया है :—]

स्कन्द = सनत्कुमार (छान्दोग्योपनिषद् ७।२६। १॥)
सनत्कुमार = स्कन्द = रुद्र पुत्र (ब्रह्मसूत्र शांकर भाष्य ३। ३। ३२॥
महाभारत शल्य पर्व ४६। ९८ ॥)

षट्शिरा द्विगुणश्रोत्रो द्वादशाक्षिभुजक्रमः।
एकग्रीवैकजठरः कुमारः समपद्यत ॥१७॥
(महाभारत वन पर्व अ० २२४)

षडाननं कुमारं तु द्विषडक्षं···॥१८॥ ·····द्वादशभुजं···॥१९॥
महाभारत, अनुशासन पर्व, अ० ८६। १८-१९ ॥)

(देवाः) क्रीडतः क्रीडनीयानि ददुः पक्षिगणाश्च ह।
सुपर्णो ऽस्य ददौ पुत्रं मयूरं चित्रबर्हिणम् ॥२१॥
राक्षसाश्य ददुस्तस्मै वराहमहिषावुभौ।
कुक्कुटश्चाग्नि-संकाशं प्रददावरुणः स्वयम् ॥२२॥
महाभारत' अनुशासन पर्व अ० ८६ ॥

गरुड़ो दयितं पुत्रं मयूरं चित्रबर्हिणम् (कुमाराय ददौ) ॥५०॥

अरुणस्ताम्रचूडं च प्रददौ चरणायुधम् ॥५१॥

महाभारत, शल्य पर्व, अ० ४६॥

दक्षः·····ताम्रचूडे कुक्कुटे ····· (शब्दार्थचिन्तामणिकोषे)

त्वं क्रीडसे षण्मुखः कुक्कुटेन ·····दक्षोऽसि ·····॥१६॥

महाभारत, वनपर्व २३१ । १६ ॥

मयूरकेतुः = स्कन्दः

महाभारत, वन पर्व, २३१, २ ॥

शिखी मयूरो वाहनमस्य शिखिवाहनः (= कुमारः = स्कन्दः) इति क्षीर स्वामि-कृता (अमर कोष १ । १ । ४० ॥) व्याख्या

शिखी = कुक्कुटः

(शब्दकल्पद्रुमकोषे)

कुमारः = स्कन्दः = सेनानी (अमर कोषे १ । १ । ४२ । (३९) ॥

एवं स्कन्दस्य महिषीं देवसेनां विदुर्जनाः ॥

महाभारत, वन पर्व, २२८ । ४८ ॥ प्रताप चन्द्रराय संस्करण कलकत्ता ॥

·····नीलं (वस्त्रं) रौद्रे ऽथ पर्वणि ।

विष्णुपर्वणि पीतं (वस्त्रं) स्याद्, रक्तं स्कन्दस्य पर्वणि ॥६६॥

भरत नाट्य शास्त्र ३ । ६६ ॥ निर्णय सागर बम्बई संस्करण

षण्मुखः [=स्कन्दः] छागरूपेण पूज्यते किं न साधुभिः ॥

(पंचतन्त्र १।४५)

षष्ठं छागमयं वक्त्रं स्कन्दस्यैवेति विद्धि तत् ।

(महाभारत, वनपर्व २२७ । १२ ॥ कलकत्ता संस्करण ॥ २२८ । १३ ॥ लाहौर संस्करण ॥)

The following quotations show that Skanda (Kumara) is a form of Agni, and his six mothers, six faces or heads and twelve eyes are merely a figurative description. The lunar mansion Krittika has Agni as its presiding deity, and has six stars in it, hence the names Karttikeya and Shanmatura Skanda = Kumara = Agni.

[निम्नलिखित प्रमाणों से सिद्ध होता है कि स्कन्द अग्नि का ही रूप और उसकी ६ माताएं, ६ मुख और सिर, १२ नेत्र इत्यादि आलंकारिक वर्णन ही है ॥

कृत्तिका नक्षत्र का देवता अग्नि है और उस नक्षत्र में ६ तारे हैं इसी लिये कार्त्तिकेय नाम हुआ तथा ६ कृतिका अग्नि की माताएं मानकर उसका षाण्मातुर नाम हुआ] :—

एतद्वा अग्नेर्नक्षत्रं यत् कृत्तिकाः ॥ तैत्तिरीय ब्राह्मणे १।१।२।१॥ १।५।१।१॥३।१।१।१॥

कृतिका—

.....तस्या रूपम् । अग्निशिखाकृत्तिषट तारकामयम् ।

इति कालिदासः (शब्दकल्पद्रुमकोष)

कृतिका:.....The third of the 27 lunar manssion or asterisms, (consisting of six stars, the Pleiades.

2. The six stars represented as nymphs acting as nurses to Karttikaya.....

(Apte's Sanskrit—English Dictionary)

[अग्नि का भी ६ की संख्या से विशेष सम्बन्ध है]

Agni is also specially connected with the number—six:—

षड्ऋतवः=संवत्सरः=अग्निः—षड् वाऽऋतवः संवत्सरस्य (शतपथ-ब्राह्मण १ । २ । ५ । १२ ॥) ऋतवः संतत्सरः (तैत्तिरीयब्राह्मण ३ । ६ । ९ । १ ॥) संवत्सरोऽग्निः (तांडयमहाब्राह्मण १० । १२ । ७ ॥)

अग्निः षट्पादस्तव्य पृथिव्वन्तरिक्षं द्यौराय ओषधिवनस्पतय इमानि भूतानि पादाः [गोपथ, पूर्व० २ । ६ ॥]

स्कन्दः = संवत्सरः = अग्निः (वैश्वानरः):—

Skanda is the name of a year, his six faces or heads are the six seasons (hence his 12 eyes are the 12 months of a year), and the year is considered as a form of Agni (i. e. Vaisvanara) :—

[स्कन्द (=कुमार) संवत्सर को कहा गया है। स्कन्द के ६ मुख संवत्सर की ऋतुएँ कही गई हैं अतएव उसके १२ नेत्र १२ मास हैं ॥ और संवत्सर को अग्नि (वैश्वानर) रूप कहा गया है] :—

यदपि तच्चक्रं (संवत्सरचक्रं) षड् वै कुमाराः परिवर्तयन्ति, तेऽपि षड् ऋतवः । [महाभारते, आदि पर्व ३ । १६७ (१४४) ॥]

(हे स्कन्द !) संवत्सरस्त्वमृतवश्च षड् वै .....॥१२॥

(महाभारत, वन पर्व अ० २३१ ॥)

संवत्सरो ऽग्निर्वैश्वानरः । (ऐतरेय ब्राह्मण ३ । ४१ ॥)

The word Skanda is derived from the root 'Skandir' (to go and to make dry), making dry is the characteristic of Agni (fire), hence Skanda is a name of Agni (fire)—

['स्कन्दिर' धातु (जिससे स्कन्द शब्द सिद्ध होता है) का अर्थ गति और शोषण है और शोषण गुण मुख्यतः अग्नि का है] :—

स्कन्दिर गतिशोषणयोः (धातुपाठ, भ्वादिगण, धातुसंख्या ६७६ ॥)
स्कन्दा नाम ये व्याधयः ..... शोषणं स्कन्दनमित्यनर्थान्तरम् ।
[हस्त्यायुर्वेद पालकाप्यमुनिकृत १ (महारोग) स्थाने, अ० १० पृष्ठ ७५]

Rudra has been stated as Kumara. Rudra is the name of Agni, hence Kumara is also the name of Agni, 'Kumara itself has been stated as a ninth form of Agni :—

[कुमार रुद्र को कहा गया है और रुद्र अग्नि को तथा कुमार को अग्नि का नौवां रूप कहा गया है] :—

कुमारः = रुद्रः—
स संवत्सरे कुमारो ऽजायत सोऽरोदीत् । ..... यदरोदीत् तस्माद् रुद्रः ।
[शत्रा० ६ । १ । ३ । ८-१०]
एष रुद्रः । यदग्निः [तैत्रा १ । १ । ५ । ८-९ ॥ १ । १ । ६ । ६]
तान्येतान्यष्टौ (रुद्रः. सर्वः = शर्वः, पशुपतिः; उग्रः, अशनिः, भवः, महान्देवः, ईशानः) अग्निरूपाणि, कुमारो नवमः [शत्रा ६, १, ३, १८]

The word 'Kumara' which is an other name of Skanda seems to have a special connection with Agni :—

['कुमार' से अग्नि का घनिष्ट सम्बन्ध प्रतीत होता है] :—

कुमारः = रुद्रपुत्रो ऽग्निपुत्रश्च-महाभारते, वन पर्व०, २२५ । १५--१९ ॥
कुमारः = अग्निः-ऋग्वेद ५ । २ । १ सायण भाष्ये । अस्य सूक्तस्य देवता-अग्निः, ऋषिः-कुमार आत्रेयः ॥ ऋग्वेद १०।१३५, अस्य सूक्तस्य देवता-यमः, ऋषिः कुमारो यामायनः । पश्यत-कठोपनिषदि नाचिकेतोपाख्यानम् – यमः कुमाराय (कठ०१ । २) नचिकेतसे नाचिकेताख्यम् 'अग्निं' प्रोवाच ॥ एवम्—तैत्तिरीय ब्राह्मणे ३ । ११ । ८ । १५ ॥ ऋग्वेद ७ । १०१,१०२—अनयोः सूक्तयोर्देवता-पूर्जन्यः,ऋषिः-कुमार आग्नेयः ॥ वत्सः (= कुमारः) = वैद्युताग्निः-इतिसायणः ऋग्वेद ७ । १०१ । १ भाष्ये ॥

Skanda has already been stated as commander-in-chief of the army of the gods. Agni also has been stated as such, therefore Skanda is identical with Agni.

Devasena is allegorically the wife of Skanda (Agni) because he is the sole controller of the army of the gods–

[स्कन्द = (अग्नि) ही देवताओं का सेनानी (सेनापति) है, अतः देव-सेना उसकी पत्नी अलङ्कार से ही कही गई है] :—

एषोऽग्निर्देवाना ꣳ सेनानीः (काठक संहिता ३६ । ८ ॥)
अग्निर्वै देवानाꣳसेनानीः (मैत्रायणी संहिता १ । १० । १४ ॥)
आग्नेयो ऽष्टाकपालः सेनान्यो गृहे । (मैत्रायणी संहिता ४ । ३ । ८ ॥)

Skanda's special connection with red colour proves his identity with Agni, which also is specially connected with the red colour :—

[स्कन्द—कुमार का जो रक्तवर्ण से विशेष सम्बन्ध है इससे भी उसका अग्नि होना ही सिद्ध होता है,क्योंकि अग्नि की मूर्ति का रंग भी लाल माना गया है । अग्नि का घोड़ा भी अलंकार से रोहित "लाल" ही कहा गया है :—

अग्नेः—रक्तं जटाधरं वह्निं कारयेद्·····त्रिनेत्रं···· ····वायुसारथिम् । ज्वाला-त्रिशूले च कर्त्तव्ये ·····"

[वाचस्पत्य कोष, देवशब्द पृष्ठे ३७०५, कालम २ देवताधिकरण शब्द]

रोहितो ह्यग्नेरश्वः [शतपथ ब्राह्मण ६ । ६ । ३ । ४ ॥]

Skanda has been stated as 'Shikhivahana' or one that has peacock or cock as his vehicle, this is based on a mis-understanding, because the word 'Shikhin' is also the name of Agni which has already been shown as a synonym of Skanda=Kumara:-

[स्कन्द को जो शिखिवाहन कहा गया है अर्थात् स्कन्द की स्वारी मोर वा कुक्कुट पर होती है । यह ठीक नहीं शिखिन् वस्तुतः अग्नि का नाम है और मोर और कुक्कुट का भी । यह रहस्य न जानकर ऐसी कल्पना की गई :—]

शिखी, [न्] ·····मयूरः·····॥ अग्निः ·····कुक्कुटः ॥
[शब्द कल्पद्रुमे]

Skanda' s mouth (face) like that of a goat is based on a mis-understanding because his synonym (Agni) has a special connection with he-or she-goat—

[बकरे का अग्नि से घनिष्ठ सम्बन्ध बताया गया है । यह तत्त्व न जानकर अग्निरूप 'स्कन्द' का मुख बकरे का कल्पित हुआ—]

आग्नेयो वा अजः (मैत्सं ४, ८, ३)

आग्नेयी वा एषा यदजा। [तै० सं० ५ । ४ । ३ । २ ॥
तै० ब्रा० ३ । ७ । ३ । १]

आग्नेयो वाऽअजः

श० ब्रा० ६ । ४ । ४ । १५ ॥ गो० उ० ३ । १६ ॥

Other aspect of Skanda :—

[स्कन्द वा कुमार के सम्बन्ध में निम्नलिखित वचन भी अनुसंधेय हैं ।]

स्कन्दः=कुमारः=बालग्रहविशेषः— [सुश्रुते, उत्तरतन्त्रे २७ । २-३] कुमारस्य शुनकस्य माता—सरमा शुनी, पिता—सीसरः, भ्रातरौ—श्याम–शबलौ [पारस्कर गृह्यसूत्रे १ । १६ । २४] ॥ स्कन्दस्य [=कुसारस्य] माता–पूतना

(महाभारते, वन पर्व०, २३० । २७ ॥)

दो अश्वि-देवता

The two Asvins have been spoken as physicians of the gods (devas) :—

[दोनों अश्वि देवताओं को देवताओं के वैद्य कहा गया है:-]

उतं त्या दैव्या भिषजा। शं नः करतो अश्विना॥
युयुतामितो रपो अप स्रिधः (= शत्रून् अपरोधकान्।
cf. मन्त्र १०॥) [ऋग्वेद ८। १८। ६॥]

अश्विनौ वै देवानां भिषजा अश्विना एतस्य देवता य आमयावी
[काठकसंहिता १३। ७॥ cf ऐतरेय ब्रा० १। १८॥ कौषीतकि ब्रा० । १८। १ ॥]

अपक्रान्तौ वा एतस्थ प्राणापानौ यस्य ज्योगामयति,
[ताराण्डय ब्रा ७। ६। १२॥]

Both of them are also spoken of as sprung from the same place, and joined with each other like two feathers of a bird

[दोनों अश्विनी-कुमारों की उत्पत्ति एक ही स्थान से कही गई है तथा उन दोनों को परस्पर संयुक्त अर्थात् जुड़े हुए माना गया है, जैसे कि पक्षी के दोनों पक्ष]:—

सयोनी वा अश्विनौ [शतपथ ब्रा० ५। ३। १। ८॥]
सजोषसावश्विना दꣳसोभिः [यजु० १२। ७४॥ सजोषसौ प्रीतौ-इति महीधरः]
अश्विना.....सजोषसा (=प्रीतिमन्तौ-इति महीधरः)
यजु० २०। ९०॥]
साकंयुजा शकुनस्येव पक्षा (अश्विनौ) ऋसं १०। १०६। ३॥
सायणभाष्यः—सांकयुजौ सहाविभज्य वर्त्तमानौ

(They have actually been shown as having the lower part of their body joined together, in a picture before the beginning of the ayurvedic work Bhavaprakasa with Bhasha translation by L. Salig Ram of Moradabad) :—

[मुरादाबाद के प्रसिद्ध वैद्य ला० शालिग्राम कृत भाषा टीका सहित, बम्बई में मुद्रित भावप्रकाश के आरम्भ में दिये हुए चित्रों में से एक में तो स्पष्ट दोनों अश्विकुमारों के शरीर के निचले भाग को जुड़ा हुआ दिखाया गया है]

Vedic devatas (deities) do not stand for a single object ; they generally stand for the Supreme Being under different names according to His different attributes, like Prajapati

Vishnu, Indra,which besides,are the names of natural objects also. Prajapati is the name of year, yajna, man, a house-holder, fire &co. Vishnu is the name of sun, yajna & food (corn), as for as I know, Indra is the name of the sun, elctricity (also lightning), soul, etc.

[भिन्न २ वैदिक देवता एक ही वस्तु का नाम नहीं होते। वे प्रायः करके मुख्यतया तो परमात्मा का ही नाम होते हैं तथा उसके भिन्न २ अनेक गुणों को दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त वे सृष्टि के अनेक पदार्थों के भी वाचक होते हैं। जैसे कि प्रजापति, विष्णु, इन्द्र इत्यादि मुख्यतया अनेक गुणविशिष्ट परमात्मा के नाम होने के अतिरिक्त सृष्टि सम्बन्धी दूसरे पदार्थों के भी नाम हैं। प्रजापति-संवत्सर, यज्ञ, पुरुष, गृहस्थ, अग्नि आदि का भी नाम है। विष्णु-सूर्य, यज्ञ, अन्नादि का भी नाम है। इन्द्र-सूर्य, विद्युत्, जीवात्मा आदि का भी वाचक है। Different devatas as names of the Almighty [भिन्न २ देवता ईश्वर के भी नाम हैं]:—

इन्द्र ईश्वरः (तैत्तिरीयारण्यक १ । १२ । ५८ पर भट्टभास्कर कृत भाष्य
त्वं ब्रह्मा त्वं च वै विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वं प्रजापतिः—मैत्र्युपनिषद् ५ । १॥ ? ४ । ४ । १२-१३
वरुणनामकः सोमदेवो जगदीश्वराभिन्नः (तैत्तिरीयसंहिता १ । २ । ८ । १)
पर सायणभाष्य)
इन्द्रस्य परमेश्वरस्य ··· (तैत्तिरीयारण्यक ३ । ११ । १ पर सायणभाष्य)
सोमो जगदीश्वरो जीवमनःप्रेरकः (अस्यवामीय सूक्त- ऋग्वेद मं० १ । १६४
पर आत्मानन्द कृत भाष्य)
परब्रह्मलक्षणो वरुणास्तं वयं स्तुमः (यजुर्वेद ४ । ३ पर महीधर भाष्य)
इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान् । एकं सद्विप्रा
बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ॥ (ऋग्वेद १० । १६४ । ३९॥)
तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः । तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः
स प्रजापतिः (यजुर्वेद ३२ । १॥)
(श्वेताश्वतर उपनिषद् ४ । २ भी देखो, यही मन्त्र कुछ भेद से आया है ।)
एतमेके वदन्त्यग्निं मनुमन्ये प्रजापतिम् । इन्द्रमेके परे प्राणमपरे ब्रह्म
शाश्वतम् ॥ (मनुस्मृति १२ । १२३ ॥)

Similarly the Asvins are personifications of heaven and earth, the two ears, sun & moon, in-breathing and out-breathing (प्राणापानौ), and day & night (In the shatapatha Brahmana ४ । १ । ५ । १६ just after the legend about Chyavana, Sukanya and the Ashvins, the Ashvins are said to be identical with the heaven and earth, hence tha tale is not historieal :—

[इसी प्रकार अश्विन देवता भी सृष्टि के कई एक पदार्थों के वाचक हैं। यथा– द्यावापृथिवी, दोनों कान, सूर्य और चन्द्र, प्राण और अपान, दिन-रात, [शतपथ ब्राह्मण ४। १।५। १६ में अश्विदेवता, सुकन्या और च्यवन के आख्यान के अनन्तर ही कहा गया है कि 'अश्विदेवता' (अश्विनौ) द्यावापृथिवी का पर्याय हैं। अतः यह आख्यान सच्चा इतिहास नहीं]:—

इमे ह वै द्यावापृथिवी प्रत्यक्षमश्विनौ [शतपथ ब्रा० ४। १। ५। १६॥]

श्रोत्रे अश्विनौ [शतपथ ब्रा० १२। ९। १। १३॥]

अश्विनौ द्व्यक्षरया प्राणापाना उदजयताम् [काठकसंहिता १४। ४॥ मैत्रायणी-संहिता १। ११। १०॥]

सूर्याचन्द्रमसौ तौ (अश्विनौ) हि, प्राणापानौ च तौ स्मृतौ। अहोरात्रे च तावेव, स्यातां तावेव रोदसी [बृहद्देवता ७। १२६॥]

Here we have to deal with one meaning only, i.e. प्राणापानौ.

[यहां पर हमने एक ही अर्थ-अर्थात् प्राण और अपान को अन्य प्रमाणों से भी पुष्ट करना है।]

The two Asvins have been mentioned as sprung from the nostrils, which clearly shows their identity with the in-breathing and out-breathing, which is generally carried on through the nostrils:—

[दोनों अश्वि देवता नासिका के दोनों छिद्रों से उत्पन्न हुए कहे गये हैं जिससे स्पष्ट है कि वे प्राण और अपान ही हैं:—]

नासत्यौ (= अश्विनौ) = "नासिकाप्रभवौ" [निरुक्त ६। १३॥]

नासिके अश्विनौ..... नासिके वै प्राणस्य पन्थाः [शतपथ ब्रा० १२। ९। १। १४॥]

नसोर्मे प्राणोऽस्तु (पारस्कर गृह्यसूत्र ३। २५॥)

अश्विनौ have been declared as "अध्वर्यू", the same epithet has been given to प्राणापानौ, or in the शतपथ ब्रा० to प्राणोदानौ, which is generally used there in stead of प्राणापानौ, hence both are identical:—

[दोनों अश्विनीकुमारों को 'अध्वर्यु' ऋत्विक् की उपमा दी गई है, इसी प्रकार प्राण, और अपान को भी। अतः दोनों अश्विनीकुमार प्राण और अपान ही हैं (शतपथ ब्राह्मण में इनके स्थान पर प्रायः प्राण और उदान ही है):—]

अश्विनावध्वर्यू [ऐतरेय ब्रा० १। १८॥ शतपथ ब्रा० १। १। २। १७॥]

प्राणापानावेवाध्वर्यू [गोपथ, पू० २। १०॥]

प्राणोदानौ वाऽअध्वर्यू [शतपथ ब्रा० ५। ५। १। ११॥]

Now we have to show how the Asvins (=प्राणापानौ) are the physicians of the devas. Indra (lord of the devas) is the name of the soul and the devas are the ten organs which constitute the body togetherwith 'mind'—the eleventh :—

[अब हमने यह दिखाना है कि अश्वि-देवता (=प्राणापानौ वा प्राणोदानौ) देवताओं के वैद्य अर्थात् उनकी चिकित्सा करने वाले क्यों कहे गए हैं। इन्द्र जो देवताओं का अधिपति कहा गया है, वह जीवात्मा है, इन्द्रियों को देवता कहा गया है। ५ ज्ञानेन्द्रिय और ५ कर्मेन्द्रिय तथा मन की नगरी का ही नाम शरीर है :—

इन्द्रो देवानामधिपतिरभवत्। तै० ब्रा० २। २। १०। ३॥
इन्द्रियमिन्द्रलिंगमिन्द्रदृष्टमिन्द्रसृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्तमिति वा।
(पाणिनि कृताष्टाध्यायी ५। २। ९३॥)

इस सूत्र पर काशिका वृत्ति में लिखा है—
इन्द्र आत्मा—अर्थात् इन्द्र आत्मा का नाम है॥
इन्द्रियं वीर्यमिन्द्रः। शत० ब्रा० २। ५। ४। ८॥
इन्द्रियं वै वीर्यमिन्द्रः। शतपथ ब्रा० ३। ९। १। १५॥ ५। ४। ३। १८॥
इन्द्रमूतयऽइतीन्द्रियवन्तमूतयऽइत्येतत्॥ शत० ब्रा० ६। ३। २। ४॥
अर्थात् इन्द्रः =इन्द्रियवान् =आत्मा।
प्राणा देवाः। (शतपथ ब्राह्मण ६। ३। १। १५॥ ७। ५। १। २१॥)
प्राणा इन्द्रियाणि। (ताराड्य महाब्राह्मण २। १४। २॥ २२। ४। ३॥)
देवानां देवनकर्मणामिन्द्रियाणाम् [निरुक्त १३। २६॥ १४। १३]

Soul (=Indra) being the master of the body – a collective name of the 11 organs, is specially connected with the number eleven :—

[११—इन्द्रियों का स्वामी होने से ही जीवात्मा (इन्द्र) का ११ के अङ्क से विशेष सम्बन्ध है :—]

ऐन्द्र एकादशकपालः (पुरोडाशः) [तांड्य महाब्राह्म० २१। १०। २३॥]
ऐन्द्रमेकादशकपालं पुरोडाशं निर्वपति (शतपथ ब्राह्मण ५। ३। १। ३॥)
Body = City of the gods (organs):—
[शरीर को देवताओं (११ इन्द्रियों) की पुरी कहा गया है :—]
नवद्वारे पुरे देही ..... (श्वेताश्वतरो० ३। १७)
अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या (अथर्ववेद १०। २। ३१॥)
तैत्तिरीयारण्यक १। २७। २॥

पुरि (=शरीरे) शेत इति पुरुषः (जीवात्मा)

प्राणापानौ = i.e. the process of taking in of the oxygen and driving out of the poisonous carbornic acid gas is most essential for the preservation of the body; for this very reason the two Asvins (=प्राणापानौ) have been mentioned as physicians (purifyers) of the devatas (the organs or collectively—the body):—

[अश्विनीकुमार (=प्राणापानौ=प्राणोदानौ) अर्थात् शुद्ध वायु को नासिकाओं द्वारा शरीर के भीतर ले जाना, तथा अशुद्ध विषैली वायु को प्रश्वास द्वारा बाहर फैंकना—यह श्वास प्रश्वास क्रिया शरीर की नित्य चिकित्सा (शोधन) करते रहने से शरीर (देवताओं=इन्द्रियों के समूह) की रक्षा करती है। आलंकारिक शब्दों में यही विज्ञानमय तत्त्व इस प्रकार वेद में कहा गया कि दोनों अश्विदेव देवताओं के चिकित्सक हैं:—]

ते ('पवित्रे'—यजु० १।१२॥) द्वे भवतः।...ताविमौ प्राणोदानौ॥
[शतपथ ब्राह्मण १।१।३।२॥]

प्राणापानौ (प्राणोदानौ-शतपथ ब्रा०) पवित्रे [तैत्तिरीय ब्राह्मण ३।३।४।४॥ ३।३।६।७॥ शतपथ ब्राह्मण १।८।१।४४॥]

प्राणो वै पवमानः [शतपथ ब्रा० २।२।१।६॥]

In the first of the following two verses it is desired that the अश्विनौ should keep away the death, and in the second verse, the desire is clearly expressed that प्राणापानौ may not leave the body but they should remain joined. (Hence अश्विनौ=प्राणापानौ):—

[अग्रिम दोनों मन्त्रों में से प्रथम में इच्छा की गई है कि अश्विनौ मृत्यु को दूर करें तथा दूसरे में यह कि प्राण और अपान शरीर को न छोड़ें। इससे यही सिद्ध होता है कि दोनों अश्विनौ प्राण और अपान के वाचक हैं और यह भी दर्शाया गया है कि प्राण और अपान परस्पर संयुक्त रहें अर्थात् वियुक्त न हों, उनके वियुक्त होने से ही मृत्यु होती है:—]

प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्मात् सं क्रामतं मा जिहीतं शरीरं प्राणापानौ ते सयुजाविह स्ताम् [अथर्ववेद ७।५३।१–२॥]

प्राणापानौ खलु वा एतस्मादपक्रामतो यस्य ज्योगामयति। [तै० २।१।१।३॥]

Here is the scientific testimony which shows that respiration is most essential for the preservation of the body:—

Respiration consists essentially in the transport of oxygen from the air to the place where the oxygen is used up by the body, and the transport of carbon dioxide from the place where it is produced, to the external air.

[See the word 'Respiration' in the Encyclopaedia Britannica, 14 th edition.]

It (blood) circulates through the arteries and veins of men and animals; arterial blood is bright, red and life-giving. Veinous blood is black-looking, and destructive of life until purified by the lungs and the liver.

[Royal Handbook and Cyclopedia of Common Things p-32.]

[श्वास प्रश्वास की क्रिया शरीर की रक्षा के लिये अत्यन्त आवश्यक है। इसका वैज्ञानिक प्रमाण भी है जो कि सार रूप से नीचे दिया जाता है :—

श्वास-प्रश्वास क्रिया बाहर से जीवन-दायक प्राण वायु को अन्दर ले जाती है तथा अशुद्ध वायु को शरीर से बाहिर निकालती है (ऐनसाईक्लोपेडिया ब्रिटैनिका चौदहवें संस्करण में 'रैस्पीरेशन' शब्द देखो)।

यदि (श्वास प्रश्वास से) फुप्फुस द्वारा अशुद्ध रक्त की शुद्धि न हो तो जीवन का नाश हो जाए (देखो—हैंडबुक तथा साईक्लोपेडिया आफ कौमन थिंग्स, पृष्ठ ३२)] अश्विनौ (=प्राणापानौ) are connected and inseparable during the lifetime, because अपान keeps the प्राण in its hold :--

[अश्विनौ का परस्पर जुड़े हुए होना जो पूर्व कहा गया है इससे भी वह प्राण और अपान ही हैं क्योंकि वह भी जीवन पर्यन्त परस्पर जुड़े रहते हैं। अपान प्राण को अपने से संयुक्त रखता है वियुक्त होने नहीं देता :—]

यन्ताऽस्यपानाय त्वा..... (तै० सं० ४ । ४ । १ । ३ ॥)
यन्तेत्यपानम् (असृजत) (तैसं ५ । ३ । ६ । २ ॥)
अपानो वै 'यन्ता' (ऋ० ३ । १३ । ३ ॥), अपानेन ह्ययं यतः प्राणो न पराङ् भवति । (ऐब्रा २ । ४० ॥ ऐआ २ । १ । ८)
अपानेन वै प्राणो धृतः (मैसं० ४ । ५ । ६)

Here are some more scientific quotations, whieh show that air is life, which contains the life-giving principal (the oxygen) whieh is taken in through air, while the foul one (carbonic acid gas) is driven out from the body :—

[यहां पर कुछ और भी वैज्ञानिक वचन दिये जाते हैं कि जिनका आशय यह है कि वायु जिसमें कि अमृत का निधि अर्थात् जीवन-प्रद भाग = प्राणवायु = औक्सीजन है वह वायु उस भेषज = औषध रूप भाग को शरीर के भीतर लावे तथा मल रूप भाग (कार्बन डाई औक्साईड) को बाहर ले जावे :—]

यो वै प्राणः स वातः (शतपथ ब्रा० ५ । २ । ४ । ९ ॥)
प्राणो वै वातः (शतपथ ब्रा० १ । १ । २ । १४ ॥)
वातो हि वायुः (शतपथ ब्र० ८ । ७ । ३ । १२ ॥)
वायुर्वै प्राणः (कौषीतकि ब्रा० ८ । ४॥)
आ वात वाहि भेषजं, वि वात वाहि यद्रपः ॥ ..... (ऋग्वेद १० । १३७ । ३॥)
वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे । प्र ण आयूँषि तारिषत् ॥ १ ॥
यद्दो वात ! ते गृहे ३ऽमृतस्य निधिर्हितः । ततो नो देहि जीवसे ॥३॥
(ऋ० १० । १८६ । १, ३ ॥)

यम-देवता

1. Yama is also the name of God:-

[यम शब्द परमात्मा का भी वाचक है—

यमो वैवस्वतो देवो यस्तवैष हृदि स्थित:.....

(मनु० ८।९२)

कुल्लूककृतटीका—यम इति। सर्वसंयमनाद्यमः परमात्मा, वैवस्वत इति दण्ड-धारित्वात्, देवनाद्देवः॥

2.Like Vishnu, Rudra, Prajapati (Brahma) &c.Yama is also the name of some other worldly things:-

[विष्णु, रुद्र, प्रजापति (ब्रह्मा), इन्द्रादि के समान 'यम' अनेक सांसारिक पदार्थों का भी वाचक है-]

Yama.....

n. twin-born, twin, forming a pair,.....; symbolical name for the number 'two'

[Sanskrit & English Dictionary by M. Monier-Williams]

3. Yama is specially connected with the number "two':-

1. Twin-born children are also called yama.

(See Shabdartha Chintamani & Apte's Sanskrit-English Dictionary)

2. In the pictures Yama is shown as having two colours : one half black and the other half white.

3. Yama (=Death) is specially connected with the two: prana & apana i. e. in-breathing and out breathig.

4 Second lunar day day belongs to Yama.

5. For fear of death (of the patient), two men do not go togther to arrange for the help of a physician.

[यम का दो की संख्या से विशेष सम्बन्ध है—]

१—जौड़े बच्चों को भी यम कहते हैं। शब्दार्थ चिन्तामणि तथा आप्टे की संस्कृत इंगलिश डिक्शनरी

२—यम का रंग चित्रों में आधा काला आधा श्वेत अर्थात् दो प्रकार का दिखाया जाता है।

३—यम = मृत्यु का प्राण और अपान-इन दो से विशेष सम्बन्ध है॥

४—यम की तिथि 'द्वितीया' है

५—मृत्यु की आशंका के कारण दो मनुष्य वैद्य को बुलाने नहीं जाते॥]

4. The synonym of Yama is 'kala' which means 'time'. See Amara Kosha:-

['यम' का पर्याय 'काल' है और काल समय को कहते हैं। देखो अमरकोष:-]

'कालो दण्डधर:.....'१।१।६२॥

'कालो दिष्टो.....समयोऽप्यथ, १।४।१॥

5. In the gloss of Maheshvara on Amara Kosha 1. 4. 1 the word 'Kala' means 'Death' (=Yama) also:— कालो..... ...मृत्यौ.

In English the word 'time' means 'death' also. See the Royal Dictionary (Lucknow), 1924:- 'Period of 'death'

The words Kala, samaya & vela, being synonyms of time, are used in the sense of death also in our daily talk.

[अमरकोष १।४।१ की महेश्वरकृत टीका में 'काल' शब्द मृत्यु के अर्थ में भी आया है- 'कालो.....मृत्यौ.....'॥

अंग्रेजी में भी 'समय'-वाचक 'time' (टाइम)-शब्द मृत्यु=यम के अर्थ में भी आया है। देखो रायल डिक्शनरी (लखनऊ) सन् १९२४:— (Period of death). समय वा काल लोक में भी इसी अर्थ में प्रयुक्त हुआ प्रसिद्ध है॥]

6. Yama = time, because:—

1. Yama is called Vaivasvata (son of Vivasvat 'the Sun). Divisions of time: day, night, याम (=prahara=3 hours), hour, minute, second are measured by rising & setting of the sun. The time after the previous rising and before the next rising is diveded into 8 Yamas (= praharas) or 24 hours. An hour is again divided into minutes & seconds. The word याम (which is a part of time) shows that the god Yama = time, because it literally means 'produced from or connected with Yama.'

Also in the Surya Siddhanta XII. 18 the Sun has

been mentioned as 'Kalakrit' (maker of time).

2. Two four-eyed dogs of black and variagated colour respectively, are mantioned as messengers of Yama. They are night & day. Their four eyes are 4 यामs (12 hours) each of day & night.—

[निम्न लिखित कारणों से भी स्पष्ट है कि यम 'समय' का नाम है।

(१) यम को 'वैवस्वत' अर्थात् सूर्य से उत्पन्न हुआ २ कहा गया है। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के बीच के समय को ८ पहरों (=२४ घण्टों) में विभक्त करके समय के छोटे २ विभाग भी कर लिये गए। एक २ अष्टम भाग का नाम 'याम' (=एक पहर) भी यही स्पष्ट करता है कि वह यम=समय का एक भाग है—'यमस्यायमिति यामः'। सूर्य सिद्धान्त १२। १८ में सूर्य को 'कालकृत् अर्थात् समय (के व्यवहार) को बनाने वाला कहा गया है॥

(२) यम के दूत रूपी दो कुत्ते चार २ आँखों वाले 'श्याम' और 'शबल' कहे गये हैं जो कि दिन और रात हैं। उनकी चार २ आँखें दिन और रात के ४-४ याम (=पहर) हैं:—]

'.....सारमेयौ श्वानौ चतुरक्षौ, ॥ १० ॥ 'यौ ते श्वानौ यम ! रक्षितारौ चतुरक्षौ' ॥११॥ 'यमस्य दूतौ चरतो जनाँ अनु' ॥ १२ ॥

ऋग्वेद १०। १४। १०-१२ (अथर्व १८। २। ११ - १२ भी देखें)

श्यामश्च त्वा मा शबलश्च प्रेषितौ यमस्य यौ पथिरक्षी श्वानौ, (अथर्व० ८। १। ९॥

अथो हैतौ श्यामशबलावेव यदहरात्रे, (जैमिनीय ब्राह्मण १, ६.)

अहर्वै शबलो रात्रिः श्यामः (जैब्रा १। ६॥)

कर्बुर=शबल (अमरकोष १। ५। १७:-चित्रं किर्मीरकलमाषशबलैताश्च कर्बुरे)॥

Kerberos, therefore, in Greek, would have meant originally the dark one, the dog of night watching the path to the lower world. Page 251

Cerberus of the Greek (P. 250). Chips from a German Workshop.—Vol. IV. Essays on Mythology & Folklore by F. Max Muller

cf. शर्वर, शबल 'शर्वरेण तमसा.....see दुर्ग on निरुक्त

अहर्वै शबलो रात्रिः श्यामः (कौषीतकि ब्राह्मण २। ९॥ एतौ वै यमश्वा अहश्च रात्री च। (काठकसंहिता, स्थानक ३७, खण्ड १४॥)

द्वे वाऽअहोरात्रे, शुक्लं च कृष्णं च (शतपथ ब्रा० ७ । ३ । १ । ३८ ॥)
अहश्च कृष्णमहरर्जुनं च (ऋ० ६ । ९ । १ ॥ निरुक्त २ । २१ ॥)
अह्ने शुक्लं पिङ्गाक्षꣳ रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम् (यजु० ३० । २१ ॥)

7. The two dogs of Yama—day & night are mentioned as ' Sarameya' (the sons of Sarama, the bitch of the gods, i . e. the dawn). Day & night are born from the Dawn. According to some Saranyu is also the dawn.—

[(३) यम इन दिन रात रूपी कुत्तों को 'सारमेय' अर्थात् सरमा (देवशुनी) के पुत्र कहा गया है। सरमा 'उषाः' है अर्थात् सूर्योदय से पूर्व जो सूर्योदय के स्थान से लालिमा प्रकट होती है। उसी से दिन और तत्पश्चात् रात्रि का आविर्भाव होता है मैक्समूलर के मत में 'सरमा' 'उषाः' का ही नाम है। कइयों के मत में 'सरण्यू' भी 'उषाः' को कहते हैं—

Sarameya, the son of Sarama, was in Sanskrit as independent a name as Hermeias in Greek. Both meant originally the same thing, the child of the dawn. But while Hermias became a centre of attraction and a germ which developed into an Olympion deity, the Vedic Sarameya dwindled away into a mere name of a dog.

(Chips from a German Workshop, Vol. IV—Essays on Mythology & Folklore, page 410)

.....Which has been supposed to mean that Sarama is the Dawn who recovers the rays of the Sun that have been carried away by night.

(Griffith's footnote on his translation of Rigveda I. 62.3.)

Sarama = सरण्यू :

Saranyu.....

(.....according to some also name of the Dawn)

.....cf.Naigh. V. 6. Nir. XII. 9.

(Sanskrit-Engtish Dictionary by M. Monier Williams)

8. Day and night are metaphorically mentioned as messengers of Yama. (= Death), because they are bringing the death nearer. One should not believe in the actual two messengers or angels of death in this scientific age. But it is a pity to note that some religious sects have borrowed the idea of 2 messeagers of Death from the Vedas, but have forgotten to grasp its allegorical sense.—

[वेदों में जो यम के दो दूतों—दिन और रात—का दो कुत्तों के रूप में अलंकार से वर्णन किया है इसका वास्तवभाव न समझते हुए परन्तु इस वैदिक वर्णन का आश्रय लेते हुए कइयों ने मृत्यु होने पर सर्वथा असम्भव मृत्यु दूतों को सच्चमुच्च के व्यक्ति मान लिया :—]

After a dead man has been placed in the tomb, and his friends have left him, and he has heard the sound of their retreating steps, two formidable angels, Munkar and Nakir, come and sit by his side, and ask him 'What say you of this man (i. e. Muhammad). The believer (Mumin) replies 'I bear witness that he is the prophet of Allah and His servant.'

[See the Article on 'Demons & Spirits (Muslim)' Column 2 of page 617 of Vol. IV of the Encyclopedia of Religion & Ethics, by Hastings]

अहले इसलाम का अक़ीदा (विश्वास) है कि जब मुर्दे को कबर में रख चुकते हैं, तो उसके पास दो फरिश्ते जो मुनकर और नकीर कहलाते हैं, आकर यह तीन सवाल करते हैं—तेरा रब्ब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? तेरा नबी कौन है ? अगर वह इन सवालों के दुरुस्त जवाब देता है और कहता है—'अल्लाह मेरा रब्ब है, इसलाम मेरा दीन है, मुहम्मद मेरा नबी है'। तो उस पर खुदा की रहमत होती है वरना इज़ाब में मुब्तिला होता है।

[रुसूमे हिन्द उर्दू, बाब ५, फसल २]

9. The idea of death connected with dogs, though allegorical in the Vedas, has been borrowed by the people of York-shire in England, leaving its allegorical sense.—

[मृत्यु के दो कुत्तों के सम्बन्ध का उपर्युक्त विचार भी दूर देशों में वेदों से ही गया—]

'दूतौ यमस्य मानुगाः' (अथर्व० ५ । ३० । ६ ॥)

Griffith's translation—

Follow not Yama's two messengers.

Griffth writes in the foot note–In Yorkshire, the Kirk-Grim [Church-spectre] is usually a huge black dog with eyes like saucers, and is called a padfoot. It generally frequents the church lanes; and he who sees it knows that he must die within year.' S. Bearing Gould, Strange Survivals, p. 16.

10. Death is a synonym of Yama, but some times also his messenger.—

[मृत्यु 'यम' का दूत तथा अधिकतर पर्याय ही कहा गया है:—]

मृत्युर्यमस्यासीद् दूतः (अथर्व० १८ । २ । २७ ॥)
मृत्युर्वै यमः (मैत्रायणी सं० २ । ५ । ६ ॥ ३ । ४ । ६ ॥ ४ । ४ । २ ॥)
मृत्युर्यमः (काठक सं० १३ । २ ॥)
एष मृत्युर्यद् यमो ऽस्यन्नेव नाम । जैत्रा० १ । २८ ॥

11. Divisions of time such as year, month, Day and night and their cause—the Sun bring the death nearer, therefore they are stated as death.–

[काल के विभाग दिन रात और संवत्सर तथा काल (समय) के कारण रूपी सूर्य को मृत्यु लाने वाले तथा मत्यु-रूप ही कहा गया है:—]

(यजमानः) एतौ पुनर्मृत्यू अतिमुच्यते यदहोरात्रे [जैमिनीय ब्रा० १, ६]
मृत्योर्वा एतौ व्राजबाहू यदहोरात्रे (कौषीतकि ब्राह्मण २ । ९ ॥)
अन्तकः (= यमः) स यो ह्येतमन्तकं मृत्युꣳ संवत्सरं वेद·····।
श० ब्रा० १० । ४ । ३ । २ ॥

एष वै मृत्युर्यदादित्यः । जै० ब्रा० १ । २७ ॥
स यः स संवत्सरो ऽसौ स आदित्यः । श० ब्रा० १० । २ । ४ । ३ ॥
एष वै संवत्सरो य एष (आदित्यः) तपति । श० ब्रा० १४ । १ । १ । २७ ॥
एष वै 'यमः' (यजु० ३७ । ११) य एष (सूर्यः) तपत्येष ह्येदꣳसर्वं यमयत्येतेनेदꣳ सर्वं यतम् । श० ब्रा० १४ । १ । ३ । ४ ॥

यमः = सूर्यः—
(ऋग्वेद सायण-भाष्य १० । १३५ । ७ ॥ तथा वेंकट माधव भाष्य में:—
यमस्य नियन्तुरादित्यस्य ॥)
देवैः संगच्छते यमः । रश्मिभिरादित्यः (निरुक्त १२ । २९ ॥ इस पर दुर्गभाष्य—अस्तं गच्छन्नादित्यः ॥)
अस्तमिते यमो भवसि (जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण ४ । ५ । १ ॥)

यमः—Perhaps originally the daily setting sun or the monthly dying moon—he (Yama) became the king in the realm of the dead (Page 78) [History of Indian Literature by Winternitz, Vol. 1.]

उग्रा च भीमा च पितृणां यमस्येन्द्रस्य (काठक सं० २२, ५.)
एष वै मृत्युर्यत्संवत्सरः । एष हि मर्त्यानामहोरात्राभ्यामायुः क्षिणोत्यथ म्रियते
(शतपथ ब्रा० १० । ४ । ३ । १ ॥)

12. Prana, Vayu, Agni and Brahma (priest) have been stated as Yama. The Earth has been stated as Yami and the night as Yamya.-

[प्राण, वायु, अग्नि तथा ब्रह्मा (ऋत्विग्-विशेष) को यम कहा गया है तथा पृथिवी को यमी और रात्रि को यम्या:—

प्राणापानौ मृत्योर्मा पातम्। तैआ ४।१।६॥ ४।४२।२॥ प्राणो मृत्युः अथर्व० ११।४।११॥ मृत्युरपानो भूत्वा नाभिं प्राविशत् ऐआ २।४।२॥ ऐउ० १।२।४॥

यमः=मध्यस्थानो वायुः (देवराजयज्वकृते निघण्टुभाष्ये ५।४॥ (स्कन्द-महेश्वरभाष्ये निरुक्त १०।१९॥)

अयं वै 'यमो' (यजु० ३८।३६॥) योऽयं (वायुः) पवते (शतपथ ब्राह्मण १४।२।२।११।)

यमः=मध्यमः (वायुः) (निरुक्त १०। १९ पर दुर्ग भाष्य]॥ यमः=वायुः-'यमाय वायवे'- इति यजुर्वेदस्य (३८।९) महीधर-भाष्ये॥

स्कन्द-महेश्वर निरुक्त १०।२० परः—वायुर्हि प्राणरूपः शरीरात्स्वयमुत्क्रामन्निरुणद्धि जीवितम्॥ प्राणो वै यमो ऽङ्गिरस्वान् पितृमान् (तैआ ५।७।११॥)

अग्निर्वाव यमः। गो० उ० ४।८॥ अग्निर्वै 'यमः' (यजु० १२।६३॥),

इयं पृथिवी यमी, आभ्या ꣳ हीदꣳ सर्वं यतम् (शतपथ ७।२।१।१०॥) अग्निरपि यम उच्यते (निरु० १०।२०॥) अथैष एव गार्हपत्यो (ऽग्निः) यमो राजा। शत्रा० २।३।२।२॥ तम् (अश्वं) यमाय ब्रह्मणे ऽददात्। (शतपथ ब्रा० ४।३।४।२७॥) यम उ वै ब्रह्मा। काण्व शतपथ ब्रा० ५।४।१।२३॥

यमायाश्वमनयन् मैसं १, ९, ४. इयं पृथिवी यमी श०ब्रा० ७।२।१।१०॥ गो० उ० ४।८॥ यम्या=रात्रिः (निघंटु १।७)

13. Cause of dreams has also been stated as Yama.-

[स्वप्नों के कारण का नाम भी यम है]—यमो राजेति वा अहमेतमुपासे (येनैतत्पुरुषः स्वप्नया चरति (शांखायानारण्यक ६।१५॥ कौषीतकि उपनिषद् ४।१५॥) स्वप्ने यमः। शांखायनारण्यक ६।२॥ कौउ ४।२॥

14. The 13th lunar day is specially connected with Yama and Yami.-

[यम और यमी का त्रयोदशी से विशेष सम्बन्ध है:—]

यमस्य त्रयोदशी (यजु० २५।४॥ मैत्रायणी संहिता ३।१५।४॥)

यम्यै त्रयोदशी (यजु० २५।५॥) यम्यास्त्रयोदशी (मैत्रायणी-संहिता ३।१५।५॥)

SCIENCE IN THE VEDAS

By

Hans Raj

(2 Parts in 1 Volume)

PART—I Pages 5 to 28:—

Two kinds of electricity—the ultimate components of the whole material world. (Also an attempt to find out the true scientific interpretation of अग्नि, सोम, मित्र, वरुण, अश्विनौ, अदिति, इन्द्र, इन्द्रस्य, हरी' in the Vedas.)

PART II—Pages 29 to 63:—

Formation of water [also throwing much light on the true scientific nature of उर्वशी, अप्सरस्, गन्धर्व, नारद, पर्वत, अर्वाग्वसु, (अर्वावसु), नमुचि, (जलन्धर, कबन्ध,) वातापि, वृत्र, इला, इरा, (ऐरावत, ऐरावण, ऐरावती), पुरूरवस्, आयु and वसिष्ठ, often found in the Vedic mythology = Figurative description of Nature.]

Price. Rs. 1/12-

High opinions received from eminent Sanskritists and Monthly & Weekly Journals.